

## संसाधनों का संरक्षण

संसाधनों के संरक्षण से तात्पर्य उनके विवेकपूर्ण व नियोजित उपयोग के साथ ही उनके अपव्यय, दुरुपयोग व अति-उपयोग से बचाव करते हुए प्राकृतिक संसाधनों का पुनः उपयोग करना है।

आज संसाधनों का कम होना चिंता का सबसे बड़ा विषय है। उत्पादन की अधिकतम सीमा तक पहुंचने के क्रम में हम उन सभी संसाधनों का प्रयोग कर रहे हैं, जो भावी पीढ़ी की संपत्ति हैं। सतत पोषणीय विकास के विचार के अनुसार संसाधन विरासत हैं, जो कि मानव समाज की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते हैं। नवीकरण के अयोग्य संसाधन कुछ समय बाद समाप्त हो सकते हैं, इसलिए जनसंख्या वृद्धि व संसाधनों के उपयोग के मध्य एक संतुलन बनाना आवश्यक है। वास्तव में इस प्रकार का संतुलन समय व स्थान के संदर्भ में भिन्न होता है। निःसंदेह, हमें किसी क्षेत्र या देश में जनसंख्या व संसाधनों के मध्य स्थैतिक की जगह गतिशील संतुलन को देखना पड़ता है। इन दोनों में से किसी एक में असंतुलन हमारे आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की निरंतरता को भंग कर सकता है। इसलिए, संसाधनों का नियोजित ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए ताकि असंतुलन न उत्पन्न हो सके।

### संसाधनों के संरक्षण की विधियाँ

1. यह आवश्यक है कि लोगों के मध्य संसाधनों के परिरक्षण व संरक्षण के बारे में जागरूकता उत्पन्न की जाए। प्राकृतिक संसाधनों के बड़े पैमाने पर विनाश के घातक परिणामों के बारे में लोगों को जागरूक बनाना चाहिए।

2. वनरोपण : अपरिपक्व तथा युवा वृक्षों को काटने से रोकना तथा लोगों में वृक्षों के रोपण तथा पोषण के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना, वनों के संरक्षण में सहायक हो सकते हैं।
3. पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीदार कृषि, समोच्च रेखाओं के अनुरूप जुताई, झूमिंग कृषि पर नियंत्रण, अतिचराई तथा अवनालिकाओं को रोकना, मृदा संरक्षण की कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ हैं।
4. वर्षा जल को रोकने के लिए बाँधों का निर्माण, फव्वारा, ड्रिप या ट्रिकल सिंचाई तकनीकों का उपयोग, औद्योगिक या घरेलू उपयोग हेतु जल का पुनर्चक्रण अमूल्य जल संसाधन के संरक्षण में सहायता करेंगे।
5. खनिज अनवीकरणीय संसाधन है, इसलिए कुशल उपयोग, निकालने व शोधन की ज्यादा अच्छी तकनीकों का विकास, खनिजों का पुनर्चक्रण तथा स्थानापन्नों के उपयोग द्वारा इनका संरक्षण किया जाना चाहिए।
6. ऊर्जा के पारम्परिक स्रोतों को बचाने के लिए, ऊर्जा के गैर-परम्परागत स्रोतों, जैसे- सौर, पवन या जल का विकास करना होगा।

संसाधनों के संरक्षण से तात्पर्य उनके विवेकपूर्ण व नियोजित उपयोग के साथ ही उनके अपव्यय, दुरुपयोग तथा अति-उपयोग से बचाव करते हुए प्राकृतिक संसाधनों का पुनः उपयोग करना है। यह आवश्यक है कि लोगों के मध्य संसाधनों के परिरक्षण तथा संरक्षण के बारे में जागरूकता उत्पन्न की जाए। अनवीकरणीय संसाधनों का संरक्षण तथा सर्वाधिक उचित उपयोग आवश्यक है।

## **संसाधन संरक्षण एवं सततपोषणीय विकास**

### **संसाधन संरक्षण**

संसाधन संरक्षण का अर्थ अपने आस - पास की वस्तुओं का अपनी जरूरतों के अनुसार कम - से कम प्रयोग करना होता है। पृथ्वी पर उपलब्ध

किसी भी वस्तु का प्रयोग अपनी आवश्यकता के अनुसार अधिक सावधानी से करना तथा वस्तुओं को दुबारा निर्मित होने लिए समय देना “ संसाधन संरक्षण ” कहलाता है। संसाधनों का संरक्षण कैसे करें।

## संसाधन संरक्षण के उपाय

संसाधन संरक्षण के बहुत से तरीके हैं तथा हर व्यक्ति संसाधनों का संरक्षण कर सकता है।

1. **पानी** भी एक संसाधन है। जिसका प्रयोग अलग – अलग कार्यों को करने के लिए किया जाता है। जैसे – पानी के कारण ही जीव – जंतु एवं मनुष्य जीवित हैं, पानी के कारण ही किसान खेती कर फसल उगा पाते हैं, पानी के कारण ही हमारे देश में चारों तरफ हरियाली फैली हुई है। इसलिए हमें सबसे पहले प्रकृति के द्वारा हमें प्रदान किए गए इस महत्वपूर्ण संसाधन का संरक्षण करने के बारे में सोचना चाहिए।

### पानी का संरक्षण करने के उपाय –

- पानी की हर बूंद कीमती होती है। इसलिए यदि किसी जगह पानी का नल खुला हो और उसका पानी फिजूल में बह रहा हो तो उसे बंद कर इस संसाधन का हम संरक्षण कर सकते हैं।
- वर्षा के पानी को इकट्ठा कर इसका प्रयोग अन्य काम को करने के लिए प्रयोग करके भी संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है।

## संसाधन के प्रकार और उसके उदहारण



Sansadhan Sanrakshan

2. **वस्तुओं का दुबारा प्रयोग** करके भी संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है।

उदहारण - **अखबार** हम सभी देश - विदेश की खबरों को जानने के लिए अखबार खरीदते हैं। जिन्हें पढ़ने के बाद हम घर के एक कोने में रख देते हैं या रद्दी में बेच देते हैं। अखबार को घर के किसी कोने में रखने के बजाय हम इससे कागज के लिफाफे तथा खरीदारी करने के लिए थैलों को बनाकर इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। जिससे इसका दुबारा प्रयोग किया जाएगा तथा एक संसाधन संरक्षण भी हो जाएगा। कागज से बने इन थैलों का प्रयोग करने के भी अपने ही लाभ हैं। जिनका वर्णन नीचे किया गया है।

- इनका प्रयोग करने का पहला फायदा तो यह है कि ये पर्यावरण के अनुकूल होते हैं।
  - कागज से बने लिफाफे तथा बैग प्लास्टिक के थैलों की तुलना में जल्दी गल जाते हैं।
3. **वन्य जीव - जंतु तथा पेड़, पौधे** भी संसाधन हैं तथा इनका बचाव करके भी हम संसाधनों का संरक्षण करने में अपना योगदान दे सकते हैं।

जैसे - आज के समय में मनुष्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए पेड़ों को लगातार काट रहे हैं। लेकिन उनके स्थान पर नये पौधे नहीं लगाते। पेड़ों से हमें ताज़ी हवा, फल, फूल आदि प्राप्त होते हैं। लगातार

पेड़ काटने के कारण हमें अकाल की स्थिति का भी सामना करना पड़ सकता है। लगातार पेड़ों के काटने के कारण वनों के जीव - जंतुओं का जीवन भी खतरे में पड़ गया है। क्योंकि जितनी आवश्यकता मनुष्य को पेड़ों की तथा वन की होती है। उससे ज्यादा जरूरत इनकी वन के जीव - जंतुओं को होती है। पेड़ों को काटने के कारण आज हमारे देश में वनों की संख्या बहुत कम हो गई है। इसलिए हमें इनका बचाव करना चाहिए तथा ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने चाहिए।

4. **बिजली** से चलने वाली हर वस्तु संसाधन है। जैसे - फ्रिज, टी.वी, ट्यूबलाइट, बल्ब, पंखा, कम्प्यूटर आदि। बिजली से चलने वाले इन संसाधनों का प्रयोग मनुष्य आरामदायक जिन्दगी जीने के लिए तथा अपना काम आसानी से करने के लिए करते हैं। इन सभी चीजों का इस्तेमाल कम करना चाहिए या जब हमें इनकी जरूरत ज्यादा हो तब करना चाहिए।

### **बिजली संरक्षण के उपाय**

- जब भी अपने घर से, कक्षा से निकलें तो बिजली से चलने वाली सभी चीजों के स्विच (Switch) बंद कर दें।
- इन चीजों का प्रयोग तब करें जब इनका प्रयोग करना जरूरी हो अर्थात् बिजली का फिजूल खर्च न करके हम संसाधनों की रक्षा कर सकते हैं।

## संसाधन और उनके उदहारण



संसाधन संरक्षण के उपाय ओर सततपोषणीय विकास

### सततपोषणीय विकास

किसी भी वस्तु का प्रयोग सतर्क होकर करना ताकि उस वस्तु का प्रयोग न केवल हम कर सकें। बल्कि जिनका प्रयोग आने वाले समय की पीढ़ी भी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कर सके। सततपोषणीय विकास कहलाता है।

### सततपोषणीय विकास के सिद्धांत

1. जीवन में प्रयोग होने वाली सभी वस्तुओं का हमेशा ख्याल रखना चाहिए।

2. मनुष्य के जीवन की गुणवत्ता को शिक्षा व तकनीक की सहायता से बढ़ाना चाहिए।
3. प्राकृतिक संसाधनों का कभी - भी दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।
4. पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक रहना चाहिए तथा व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन करना चाहिए।
5. हम जिस समुदाय या समाज में रह रहे हैं। उन्हें पर्यावरण की देखभाल करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।